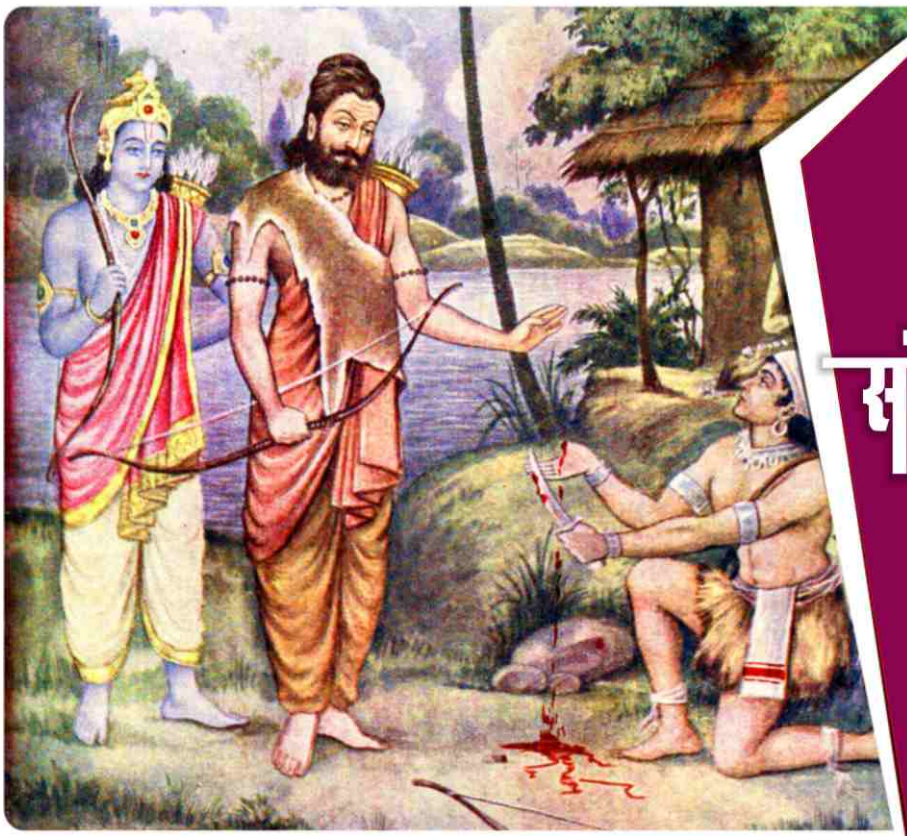

क्या है संस्कार-मान्यताओं का रहस्य?

संस्कारों का भारतीय धर्म संस्कृति में अपना विशेष महत्व है। 'संस्कार' शब्द का मतलब है- 'स्पर्श द्वारा आकार', अर्थात् एक बीज को स्पर्श देकर उसे पूर्णता तक पहुँचाना ही संस्कार है। संस्कार का तात्पर्य है 'शुद्ध आकार' अर्थात् पूरे जीवन में अशुद्धता की स्थिति न बने, उच्च विचार, उच्च ज्ञान के साथ वह अपनी यात्रा प्रारम्भ करे। 'संस्कार' शब्द से ही ''संस्कृति'' शब्द बना है।

भगवान मनु ने ब्राह्मणत्व को संस्कारों की उपलब्धि बताया है। वे कहते हैं ''जन्म से सभी शूद्र उत्पन्न होते हैं। संस्कार प्रक्रिया के आधार पर उनका दूसरा देव जन्म होता है।'' आगे चलकर उन्होंने ब्राह्मणत्व प्राप्त होने के सन्दर्भ में लिखा है- यज्ञों और महायज्ञों में अनुप्राणित करने पर यह सामान्य शरीर ही ब्राह्मण बन जाता है'' इसी प्रकार के अनेकों कथोपकथन अन्यान्य धर्मशास्त्रों में भरे पड़े हैं। उनका अभिप्राय यह है कि सुसंस्कारिता मात्र शिक्षण, सत्संग उपचार के अध्यात्म और विज्ञान के समन्वय से बनी हुई निर्धारित विधि-व्यवस्था के द्वारा भी विकसित किया जा सकता है।

शुद्ध संस्कारों द्वारा ही बल, बुद्धि, ज्ञान विवेक, ओज का विकास पूर्ण रूप से संभव है। संस्कारित व्यक्ति जीवन में निराश, हताश नहीं हो सकता। वह कुबुद्धि युक्त नहीं हो सकता, वह मदांध नहीं हो सकता। संस्कार देने का कर्त्तव्य सबसे पहले माता-पिता पर आता है, क्योंकि वे अपने से भी योग्य रचना का निर्माण कर रहे होते हैं। पर इतना निश्चित है, कि जिस प्रकार माता-पिता ने बालक में संस्कारों की रचना की, उसी प्रकार गुरु भी इन संस्कारों द्वारा शिष्य को अनेक प्रकार से उसका मार्जन कर उसके गुणों में अभिवृद्धि कर उसे पूर्ण संस्कारित करते हैं।

इस लेख में हिन्दू धर्म की मान्यताओं एवं संस्कारों से संबंधित शंकाओं का वैज्ञानिक दृष्टिकोण से निवारण किया गया है। मेरी अभिलाषा है कि भारतीय जनता अपने धर्म एवं संस्कारों के महत्त्व, रहस्य को समझे और उसे अपने जीवन में आत्मसात् कर अपना लोक-परलोक सुधारें।

पिंडदान करने की परंपरा क्यों?

हिंदू धर्म में पिंडदान की परंपरा वेदकाल से ही प्रचलित है। मरणोपरांत पिंडदान किया जाता है। दस दिन तक दिए गए पिंडों से शरीर बनता है। क्षुधा का जन्म होते ही ग्यारहवें व बारहवें दिन सूक्ष्म जीव श्राद्ध का भोजन करता है। ऐसा माना जाता है कि तेरहवें दिन यमदूतों के इशारे पर नाचता हुआ यमलोक चला जाता है। पितरों के मोक्ष के लिए यह एक अनिवार्य परंपरा है और इसका बहुत अधिक धार्मिक महत्त्व है। योगवासिष्ठ में बताया गया है-

आदौ मृता वयमिति बुधयन्ते तद्नुक्रमात्।
बंधु पिण्डादिदानेन प्रोत्पन्ना इवा वेदिनः।।

अर्थात् प्रेत अपनी स्थिति को इस प्रकार अनुभव करते हैं कि हम मर गए हैं और अब बंधुओं के पिंडदान से हमारा नया शरीर बना है। चूंकि यह अनुभूति भावनात्मक ही होती है, इसलिए पिंडदान का महत्त्व उससे जुड़ी भावनाओं की बदौलत ही होता है। ये भावनाएं प्रेतो-पितरों को स्पर्श करती हैं।

पिंडदानादि पाकर पितृगण प्रसन्न होकर सुख, समृद्धि का आशीर्वाद देते हैं और पितृलोक को लौट जाते हैं। जो पुत्र इसे नहीं करते, उनके पितर उन्हें शाप भी देते हैं।

कहा जाता है कि सर्वप्रथम सत्युग में ब्रह्माजी ने गया में पिंडदान किया था, तभी से यहां परंपरा जारी है। पितृपक्ष में पिंडदान का विशेष महत्त्व है। पिंडदान के लिए जौ या गेहूं के आटे में तिल या चावल का आटा मिलाकर इसे दूध में पकाते हैं और शहद तथा घी मिलाकर १०० ग्राम के ७ पिंड बनाते हैं। एक पिंड मृतात्मा के लिए और छह जिन्हें तर्पण किए जाते हैं, उनके लिए समर्पित करने का विधान है।

प्राचीन काल में पिंडदान का कार्य वर्षभर चलता था। यात्री ३६० वेदियों पर गेहूं, जौ के आटे में खोया मिलाकर तथा अलग से बालू के पिंड बनाकर दान करते थे। अब विष्णु मंदिर, अक्षय, वट, फलगू और पुनपुन नदी, रामकुंड, सीता कुंड, ब्रह्म मंगलगौरी, कागवलि, वैतरणी तथा पंचाय तीर्थों सहित ४८ वेदियां शेष है, जहां पिंडदान किया जाता है।

वायुपुराण में दी गई गया माहात्म्य कथानुसार ब्रह्मा ने सृष्टि रचते समय गयासुर नामक एक दैव्य को उत्पन्न किया। उसने कोलाहल पर्वत पर घोर तपस्या की, जिससे प्रसन्न होकर विष्णु ने वर मांगने को कहा। इस पर गयासुर ने वर मांगा, 'मेरे स्पर्श से सुर, असुर, कीट, पतंग, पापी, ऋषि-मुनि, प्रेत आदि पवित्र होकर मुक्ति प्राप्त करें।' उसी दिन से गयासुर के दर्शन और स्पर्श से सभी जीव मुक्ति प्राप्त कर बैकुंठ जाने लगे।

कूर्मपुराण में कहा गया है-

गयातीर्थ परं गुह्यं पितृणां चातिवल्लभम्।
कृत्वा पिण्डप्रदानं तु न भूयो जायते नरः।।
सकृद् गयाभिगमनं कृत्वा पिण्डं ददाति यः।
तारिताः पितरस्तेन यास्यन्ति परमां गतिम्।।

अर्थात् गया नामक परम तीर्थ पितरों को अत्यंत प्रिय है। यहां पिंडदान करके मनुष्य का पुनः जन्म नहीं होता। जो एक बार भी गया जाकर पिंडदान करता है, उसके द्वारा तारे गए पितर परम गति को प्राप्त करते हैं और नरक आदि कष्टप्रद लोकों से मुक्त हो जाते हैं।

कूर्मपुराण में आगे लिखा है कि वे मनुष्य धन्य हैं, जो गया में पिंडदान करते हैं, वे माता-पिता दोनों के कुल की सात पीढ़ियों का उद्धार कर स्वयं भी परम गति को प्राप्त करते हैं।

पिंडदान का अधिकार पुत्र के या वंश के किसी अन्य पुरुष को ही होता है। किंतु १९८५ में मिथिला के पंडितों द्वारा स्त्रियों को भी पिंडदान का अधिकार दे दिया गया है। इस संबंध में सीताजी द्वारा दशरथ को किए गए पिंडदान का आख्यान प्रसिद्ध है।

सीता द्वारा पिंडदानः कहा जाता है कि राम, लक्ष्मण और सीता जब पिता दशरथ का पिंडदान करने गया में फल्गू नदी के तट पर पहुंचे, तो वे सीता को छोड़कर पिंड सामग्री जुटाने चले गए। इस बीच आकाशवाणी होने से पता चला कि शुभ मुहूर्त्त निकला चला जा रहा है, अतः सीता ही पिंडदान कर दें। स्थिति को देखते हुए सीता ने गायों, फल्गू नदी, केतकी पुष्पों और अग्नि को साक्षी मानकर श्वसुर दशरथ को बालू के पिंड बनाकर दान कर दिए। जब राम और लक्ष्मण लौटे तो सीता ने इस घटना को बताया, लेकिन उन्हें विश्वास नहीं हुआ। तब सीता ने सभी साक्षियों को इसकी पुष्टि करने को कहा तो वटवृक्ष के अलावा किसी ने साक्षी न दी। इससे क्रोधित होकर सीता ने गायों को अपवित्र वस्तुएं खाने, फल्गू नदी को ऊपर से सूखी किंतु धरातल के नीचे बहने, केतकी पुष्प को शुभकार्य से वंचित रहने और अग्नि को संपर्क में आने सभी वस्तुओं को नष्ट करने का शाप दे दिया तथा वटवृक्ष को हर ऋतु में हरा-भरा रहने का वरदान दे दिया।

पिंडदान, श्राद्ध आदि कर्म पुत्र द्वारा ही क्यों?

आचार्य वशिष्ठ ने पुत्रवानू व्यक्ति की महिमा के संबंध में कहा है-

अपुत्रिण इत्यभिशापः।

अर्थात् पुत्रहीनता एक प्रकार का अभिशाप है।

और आगे भी बताया है-

पुत्रेण लोकाञ्जयति पौत्रेणनन्त्यमश्नुते।
अथ पुत्रस्य पौत्रेण ब्रध्नस्याप्नोति विष्टपम्।।

अर्थात् पिता, पुत्र होने से लोकों को जीत लेता है, पौत्र होने पर आनन्त्य को प्राप्त करता है और प्रपौत्र होने पर वह सूर्य लोक को प्राप्त कर लेता है।

मनु महाराज का वचन है-

पुंनाम्नो नरकादस्मात् त्रायते पितरं सुतः।
तस्मात्पुत्र इति प्रोक्तः स्वयमेव स्वयंभुवा।।

अर्थात् 'पुं' नामक नरक से 'त्र' त्राण करने वाला 'पुत्र' कहा जाता है। ब्रह्मा जी ने लड़के को पुत्र कहा है। इसीलिए आस्तिक जन नरक से रक्षा की दृष्टि से पुत्र की इच्छा करते हैं। यही कारण है कि पिंडदान, श्राद्धकर्म करने का अधिकार पुत्र को प्रदान किया गया है।

शास्त्रों में यह भी कहा गया है कि पुत्र वाले धर्मात्माओं की कभी दुर्गति नहीं होती। पुत्र का मुख देख लेने से पिता पितृ-ऋण से मुक्त हो जाता है। पुत्र द्वारा प्राप्त श्राद्ध से मनुष्य स्वर्ग में जाता है। पूत का अर्थ है-पूरा करना। त्र का अर्थ है- न किए से भी पिता की रक्षा करना। पिता अपने पुत्र द्वारा इस लोक में स्थित रहता है। धर्मराज यमराज के मतानुसार जिसके अनेक पुत्र हों, तो श्राद्ध आदि पितृ-कर्म तथा वैदिक (अग्निहोत्र आदि) कर्म ज्येष्ठ पुत्र के करने से ही सफल होता है। भाईयों को अलग-अलग पिंडदान, श्राद्ध-कर्म नहीं करना चाहिए।

भ्रातरश्च पृथक् कुर्युर्नाविभक्ताः कदाचन।

अर्थात् श्राद्ध के अधिकार के संबंध में शास्त्रों में लिखा है कि पिता का श्राद्ध पुत्र को ही करना चाहिए। पुत्र न हो, तो स्त्री श्राद्ध करे। पत्नी के अभाव में सहोदर भाई और उसके भी अभाव में जामाता एवं दौहित्र भी श्राद्ध के अधिकारी हैं।

आत्मा को अमर माना जाता है क्यों?

धार्मिक ग्रंथों के अनुसार आत्मा ईश्वर का अंश है, अतः यह ईश्वर की ही भांति अजर-अमर है। संस्कारों के कारण इस दुनिया में उसका अस्तित्त्व भी है। वह जब जिस शरीर में प्रवेश करती है, तो उसे उसी स्त्री या पुरुष के नाम से पुकारा जाता है। आत्मा का न कोई रंग है न कोई रुप, इसका कोई लिंग भी नहीं होता।

ऋग्वेद में बताया गया है-

अपाङ्प्राङेति स्वधया गृभीतोऽमर्त्यो मर्त्येना सयोनिः।
ता शश्वन्ता विषूचीना विचन्तान्यन्यं चिक्युर्न नि चिक्युरन्यम्।।

अर्थात् जीवात्मा अमर है और शरीर प्रत्यक्ष नाशवान। संपूर्ण शारीरिक क्रियाओं का अधिष्ठाता आता है, क्योंकि जब तक शरीर में प्राण

"कालसर्प यंत्र मुद्रिका"

समस्त कष्टों, दैहिक व मानसिक कष्टों के निवारणार्थ कालसर्प यंत्र का लॉकेट व मुद्रिका

कालसर्प योग एक भयानक पीड़ादायक योग है जो व्यक्ति के जीवन को अत्यन्त दुःखदायी बना देता है। उस व्यक्ति के जीवन में किसी न किसी महत्वपूर्ण वस्तु का अभाव बना ही रहता है। चाहे वह व्यक्ति पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु हो अथवा विश्व में बेहद चर्चित बिगबुल हर्षद मेहता।

इस योग ने सभी को कष्ट दिया है। जैसे कि विभिन्न प्रकार के दैहिक व मानसिक कष्ट भोगने पड़ते है। स्वास्थ्य प्रायः बिगड़ा रहता हैं। पैतृक संपति उसके जीवन में नष्ट हो जाती है या पैतृक संपत्ति उसे नहीं मिलती। मिलती भी तो आधी-अधूरी। कार्य-व्यवसाय में भाई बन्धु धोखा देते हैं। भूमि-भवन का सुख नहीं मिल पाता। शिक्षा भरपूर लेकर भी उसका जीवन में उपयोग नहीं होता। संतान से कष्ट पाता है। कोर्ट-कचहरी, दावे-थानों के चक्कर लगाने पड़ते है। धन का नाश होता है। वह विपत्ति काल में सब के काम आता है परन्तु उसकी विपत्ति में उसके कोई काम नहीं आता। अगर आप भी वाकई कालसर्प योग के प्रभाव में हैं तो कालसर्प यंत्र अंगूठी अवश्य धारण करनी चाहिए।

कालसर्प यंत्र न्यौछावर-2100/-अंगूठी, लॉकेट-1500/-

सम्पर्क करें:- **विश्व तंत्र ज्योतिष**

प्लॉट नं.-1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज मैन गेट के पास, जोधपुर-342001 (राज.)
0291-2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्स : 0291-2618625
Email : tantravtj@yahoo.co.in Visit us : www.kamalshrimali.com

आप सीधे ही 'विश्व तंत्र-ज्योतिष' के बैंक एकाउन्ट में भी पैसा जमा करवा सकते हैं।
आपकी सुविधा के लिये बैंक एकाउन्ट नम्बर इस प्रकार हैं
STATE BANK OF INDIA A/C NO. 100-563-410-66
(All Amount Payble at Jodhpur Account)

रहता है, तब तक वह क्रियाशील रहता है। इस आत्मा के संबंध में बड़े-बड़े पंडित व मेधावी पुरुष भी नहीं जानते। इसे ही जानना मानव जीवन का प्रमुख लक्ष्य है।

बृहदारण्यक उपनिषद् ८/७/१ में आत्मा के संबंध में लिखा है- आत्मा वह है, जो पाप से मुक्त है, वृद्धावस्था, मृत्यु एंव शोक से रहित है, भूख और प्यास से रहित है, जो किसी वस्तु की इच्छा नहीं करती, यद्यपि उसकी इच्छा करनी चाहिए, किसी वस्तु की कल्पना नहीं करती, यद्यपि उसकी कल्पना करनी चाहिए। यह वह सत्ता है जिसको समझने का प्रयत्न करना चाहिए।

श्रीमद्भगवद्गीता में आत्मा की अमरता के विषय पर विस्तृत व्याख्या की गई है-

न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते शरीरे।।

अर्थात् यह आत्मा किसी काल में भी न तो जन्मता है और न मरता ही है तथा न यह उत्पन्न होकर फिर होने वाला ही है, क्योंकि यह अजन्मा, नित्य, सनातन और पुरातन है। शरीर के मारे जाने पर भी यह नहीं मारा जाता।

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णान्यन्यानि संयाति नवानि देही।।

अर्थात् जैसे मनुष्य पुराने वस्त्रों को त्यागकर दूसरे नए वस्त्रों को ग्रहण करता है, वैसे ही जीवात्मा पुराने शरीर को त्यागकर दूसरे नए शरीर को प्राप्त होता है। आगे श्लोक २३ व २४ में लिखा है कि आत्मा को शस्त्र नहीं काट सकते, इसको आग नहीं जला सकती, इसको जल नहीं गला सकता और वायु सुखा नहीं सकती, क्योंकि यह आत्मा अछेद्य है, अदाह्य और निःसंदेह अशोष्य है और यह नित्य, सर्वव्यापी, अचल, स्थिर रहने वाला तथा सनातन है।

शरीर की मृत्यु के बाद आत्मा को प्रेत योनि से मुक्ति के लिए १३ दिनों का समय लगता है। इसलिए इस दौरान आत्मा की शांति व मुक्ति के लिए पूजा-पाठ, दान-दक्षिणा आदि अनुष्ठान किए जाते हैं। इसके बाद आत्मा पितृ-लोक को प्राप्त हो जाती है। आत्मा की अमरता का यही दृढ़ विश्वास है।

♦♦♦

पितृ दोष शांति कवच

हर व्यक्ति यही चाहता है कि उनके पितर यानि उनके पूर्वज मृत्यु के बाद उत्तम लोक मे जायें, इसका कारण यह भी है कि पितरों के खुश और सुखी रहने से परिवार में सुख–समृद्धि और उन्नति बनी रहती है, लेकिन आज के इस भाग–दौड़ भरी जिंदगी में 'समय का अभाव' शब्द व्यक्ति विशेष का अपनी जिम्मेदारियों को नहीं निभा पाने का सबसे सरल समाधान बन गया है, साथ ही शास्त्रोक्त विधि का अपूर्ण ज्ञान भी आपकी विपत्तियों का कारण है, श्रद्धा से अपने पूर्वजों को याद करते हुए भी कहीं ना कहीं कुछ कमी रह ही जाती है और आप अपनी समस्यायों से मुक्त नहीं हो पाते तो एक विशेष समाधान लायें है हम अपने पाठको के लिये....

'पितृ दोष शांति कवच', चाहें त्रुटि हुई हो या भूल, या समयाभाव की वजह से, अज्ञानता से उपजी गलती, यह कवच जिस प्रकार पूजा–उपासना से त्रुटि होने पर हम देवी देवताओ से क्षमा–प्रार्थना करते हैं, उसी प्रकार यह कवच रक्षा करता है, धारक की क्षमा–याचना के रूप में अपने पूर्वजों से व प्राप्ति करवाता है उनके आर्शीवाद की.....

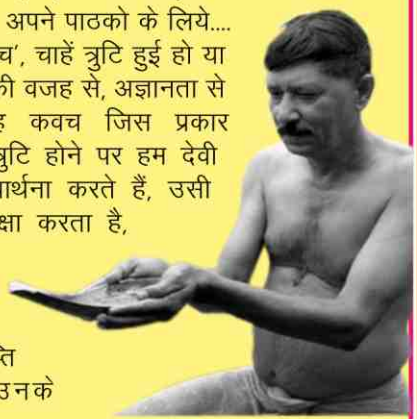

न्यौछावर राशि 3000/– रु.

भूमि-भवन सुख पैकेट

- आज तक प्रयास करने पर भी स्वयं का आवास नहीं हो पाया है?
- बार–बार मकान खरीदते है लेकिन फिर बिक जाता हैं?
- कई बार मकान बनाने का प्रयास किया लेकिन अधूरा ही रहता है?
- जमीन है लेकिन झगड़ें में फँसी हुई हैं?
- पैतृक संपत्ति में मकान है, लेकिन मिल नहीं पा रहा?
- मकान भी है लेकिन किरायेदार कब्जा जमा कर बैठे हैं?
- भवन के लिये कर्ज का इतंजाम नहीं हो पा रहा?
- अपनें जीते जी संतान को स्वयं के आवास में देखने की इच्छा हैं?
- क्या आप भी अपने जीवन में भूमि–भवन का सुख प्राप्त करना चाहते हैं?

मनुष्य को जीवन यापन करने के लिए मात्र तीन चीजों की आवश्यकता होती है और वह है रोटी, कपड़ा और मकान। जब मनुष्य की पहली दो आवश्यकतायें सुचारू रूप से पूरी हो जाती है तो उसकी हार्दिक इच्छा होती है कि वह अपनी तीसरी आवश्यकता की तरफ कदम बढ़ाए जो एक सुंदर सलोने और स्वप्निल घर की है। वह घर, जिसका मालिक वह स्वयं हो। जिसके हर कोने को वो अपनी मर्जी से सजा सके, सुधार सके और अपनी भावनाओं के मोती उसमें पिरो सके। उसकी ये कामना कोई बहुत बड़ी नहीं कि जो पूरी नहीं हो सके। जब व्यक्ति अपने स्वयं के घर की अभिलाषा में कर्ज लेकर या अपने द्वारा जमा की गई पूंजी मकान के लिये खर्च कर देता है फिर भी वह शांति एवं सुकून की जिंदगी नहीं गुजार पाता और उसके सारे ऐशो-आराम धराशायी हो जाते हैं। आखिर ऐसी क्या कमी रह जाती है उसके संघर्ष में कि उसके द्वारा किये गये सारे प्रयास बेकार हो जाते हैं और अपने घर का सपना उसे टूटता सा महसूस होता है। अगर आप भी अपने स्वपनिल घर का सपना सजाये बैठे हैं तो आपको चिंतित होने की कोई बात नहीं है क्योंकि हम आपके लिए लाए हैं भूमि-भवन सुख पैकेट जो आपके अरमानों को सजाकर आपकी कामना पूर्ण करेगा।

इस पैकेट में आप पायेंगे– भवन लक्ष्मी कवच, श्री कुबेर यंत्र, पारद हनुमान प्रतिमा, स्फटिक माला, त्रिकोण मंगल यंत्र, आम की लकड़ी का स्वास्तिक।

न्यौछावर मात्र 3500 रुपये

आप सीधे ही बैंक एकाउन्ट में भी पैसा जमा करवा सकते हैं।

HDFC Bank A/c No. 014-225-6000-5331

(All Amount Payble at Jodhpur Account)

त्रिनेत्र सिद्धि केन्द्र

'त्रिनेत्र भवन' प्लोट नम्बर–1, महावीर नगर, गौरव पथ, पॉलिटेक्निक कॉलेज के मैन गेट के पास, जोधपुर (राज.)

फोनः 0291–2621625, 2615625, 2618625, 2440111, 2440999 टेलीफैक्सः 0291–2618625

E-mail: tantravtj@yahoo.com Visit us: fameandfortune.org